स्वस्थ आस्था से चरित्र निर्माण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारत धर्म प्रधान देश है। इसे आर्य देश कहा जाता है। यहां की संस्कृति आध्यात्मिक भावना से ओत–प्रोत है। आध्यात्मिकता का सम्बन्ध हमारे आन्तरिक जगत से है। हम केवल बाह्य विश्व में ही नहीं रहते बल्कि आतंरिक जगत में भी जीवित रहते हैं। पाश्चात्य देश में भौतिकता को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसलिए वहां पर भौतिक आविष्कार अधिक हुए हैं। चौरासी लाख जीवन योनियों में सभी प्राणियों में आत्मा समान है। जो यह देखता है वही समदर्शी है। जो व्यक्ति समाज के नियमों को मानता है। समाज के नियमों के अनुकूल जीवन यापन करता है और नैतिक नियमों में विश्वास करता है उसका चरित्र निर्माण होता है। प्राचीनकाल में राजसत्ता को नियंत्रित करने के लिए गुरूओं का स्थान सर्वोपरि था। गुरू की मंत्रणा से ही राजा कोई कार्य करता था। गुरू समदर्शी होते थे। चरित्र निर्माण में उनका सबसे ऊॅचा स्थान था। चरित्र के बिना कुछ भी नहीं हो सकता है। धर्म चरित्र निर्माण करता है। सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए मार्ग चुनना आवश्यक है। यदि मार्ग गलत हो जाएगा तो हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते। आस्था भी मानव जीवन में बहुत महत्त्व रखती है। आस्था मनुष्य को लक्षित मंजिल तक पहुंचा देती है। भगवान शंकर के गणेश और कार्तिकेय दो पुत्र थे। जब वे दोनों विश्व भ्रमण के लिए निकले तो गणेशजी ने मूसक पर बैठकर माता–पिता की परिक्रमा करके उनके पास आकर बैठ गये। कार्तिकेय अपने वाहन पर बैठकर विश्व की परिक्रमा करने लगे जिससे वे बाद में आये। भगवान शंकर ने निर्णय दिया कि गणेश की आस्था मता–पिता में अधिक थी। इसलिए वे अपने कार्य को समय से पूरा कर लिये। चरित्र निर्माण के लिए आस्था जरूरी है। आस्था से ही मनुष्य महान होता है। धर्मों का अस्तित्त्व आस्था के ही कारण है।

पुनरुत्थान कार्यक्रम पतन से उत्थान की तरफ, ह्रास से विकास की तरफ ले जाने वाला एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें प्रोफेसर (डॉ) सोहनराज तातेड़ ने भारतीय संस्कृति के ऐसे पक्ष को उजागर किया है, जिससे राष्ट्रोत्थान और मानव कल्याण का वृहद् रूप प्रस्तुत हुआ है।

भारतीय संस्कृति ईश्वर केन्द्रित है। ईश्वर सबकुछ कर सकता है। जिस व्यक्ति की सहायता ईश्वर करता है, उसको कोई नहीं मार सकता। चाहे पूरा संसार ही उसके विरुद्ध हो जाय फिर भी उस व्यक्ति का बाल भी बांका नहीं हो सकता–

जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय,

बाल न बांका कर सके जो जग बैरी होय।

कोई भी व्यक्ति कर्मों से बड़ा या छोटा होता है। यदि वह अच्छा कर्म करता है, सदाचार पूर्वक व्यवहार करता है, ईश्वर पर विश्वास करता है तो निश्चित ही ईश्वर भी ऐसे व्यक्ति की सहायता करता है। किन्तु जो व्यक्ति आलसी है, दूसरों के सहारे जीवन यापन करने की परिकल्पना करता है, नास्तिक है, उसकी सहायता कोई नहीं कर सकता। ईश्वर पर आस्था रखने का अर्थ है सकारात्मक दृष्टिकोण रखना और ईश्वर पर आस्था न रखने का मतलब है निषेधात्मक दृष्टिकोण रखना। दुर्घटना के समय कुछ आदमी बच जाते है और कुछ की मृत्यु हो जाती है तो प्रायः लोग यही कहते है कि जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय। मेरा मानना है कि यदि किसी इंसान में जीवित रहने की अधिक इच्छा हो, मन में ज्यादा हिम्मत हो और यदि भगवान चाहते है कि वह आदमी जिन्दा रहे, तो इस इंसान को कोई नहीं मार सकता। इस संबंध में भक्त प्रह्लाद का उदाहरण द्रष्टव्य है। प्रह्लाद के पिता हिरणाकश्यप बहुत घमंडी और अहंकारी था। वह ईश्वर में विश्वास नहीं करता था। स्वयं को ही ईश्वर मानता था। किन्तु प्रह्लाद ईश्वर का भक्त था और अपने पिता को ईश्वर नहीं मानता था। इससे उसके पिता बहुत नाराज हुए और प्रह्लाद को जान से मारने के लिए अनेक षड्यंत्र रचे। किन्तु प्रह्लाद की रक्षा तो स्वयं ईश्वर कर रहे थे। इसलिए हिरणाकश्यप के द्वारा रचा गया सम्पूर्ण षडयंत्र विफल हो गया और प्रह्लाद का बाल भी बांका नहीं हुआ। इस दृष्टांत से ईश्वर के अस्तित्व का पता चलता है। सैंकड़ों प्रयत्न के बावजुद भी हिरणाकश्यप प्रह्लाद को न मार सका। जिसके रक्षक स्वयं भगवान है उसको इस संसार में कोई भी मार नहीं सकता। इस दृष्टांत से यह भी ज्ञात होता है कि भक्त प्रह्लाद का ईश्वर में पूर्ण भरोसा था और उनका यही भरोसा ईश्वर को साकार रूप में प्रकट करके हिरणाकश्यप का वध करा दिया। हिरणाकश्यप नास्तिक था। इसी प्रकार का दृष्टांत हमें महाभारत में भी मिलता है। भरी सभा

में दुर्योधन ने जब द्रौपदी का अपमान किया और अपने भाई दुस्साशन से द्रौपदी का चीरहरण करवाया तो उस समय द्रौपदी असहाय होकर भगवान श्रीकृष्ण की शरण में गयी। भगवन श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की साड़ी को इतना बड़ा कर दिया कि हजारो हाथियों की शक्ति रखनेवाला दुस्साशन हार मानकरके गिर गया लेकिन द्रौपदी को सभा में नग्न न कर सका, क्योंकि द्रौपदी की रक्षा स्वयं भगवान कर रहे थे। द्रौपदी को पूर्ण विश्वास था जब आदमी निःसहाय होकर ईश्वर की शरण में जाता है तो निश्चित ही ईश्वर उसकी पुकार को सुनते हैं और उसकी रक्षा करते हैं। आस्था का सम्बन्ध हमारे भावों और विचारों से है। जब आस्था बलवान होती है तो व्यक्ति असम्भव को भी सम्भव बना देता है।